शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संपादकीय

विश्व शांति सेना और संयुक्त राष्ट्र संघ

विनोबा

आज दुनिया में एक संस्था है, जिसे संयुक्त राष्ट्र संघ कहते हैं। दुनिया के देशों के झगड़े और सवाल उसके सामने रखे जाते हैं। कुछ फैसले उसमें होत हैं और कुछ को मदद दी जाती है। वैसे तो सेना की भी मदद दी जाती है। जिन राष्ट्रों का वह समूह है, उनमें कई राष्ट्रों के पास बहुत ही ज्यादा लड़ाई का सामान है। सब राष्ट्रों के बीच झगड़ों को हल करने के लिए और सब राष्ट्रों में शांति की स्थापना करने के लिए यह संस्था भी अपनी एक छोटी-सी सेना रखती है। वह छोटी-सी होने के कारण कोई खास मुकाबला नहीं कर सकती। सहज ही यह प्रश्न आयेगा कि जिन देशों के पास कहीं ज्यादा सामर्थ्य है, उनसे स्नेह और शांति की स्थापना के लिए जो प्रतिनिधि उस संस्था में आये हैं, वे सेना क्यों रखें ? उससे क्या मतलब निकलेगा ? अनेक राष्ट्रों की सेना और बीच में संयुक्त राष्ट्र की भी सेना - इसके कोई खास मायने नहीं निकलते। इसमें कोई शक नहीं कि वह राष्ट्र-समूह शांति की इच्छा से ही स्थापित हुआ है और वहां जो मसलों की चर्चा हुआ करती है, उसका उद्देश्य शांति-स्थापना होता है। यद्यपि वह बहुत कुछ कर नहीं सका, तो भी थोड़ा कर सकता है। फिर भी उसका इरादा सच्चा है और दुनिया की आज की हालत में कुछ उपयोग भी है। सच्चाई के साथ शांति का उद्देश्य रखते हुए और जानते हुए भी कि कई राष्ट्र बहुत ज्यादा शस्त्रों से लैस हैं, संयुक्त राष्ट्र भी अपनी सेना रखे, तो इसका मतलब यही है कि अक्ल काम नहीं कर रही। दिल चाहता है कि शांति स्थापना हो, लेकिन अक्ल तो पुरानी ही काम कर रही है। बड़े-बड़े राष्ट्र बड़ी-बड़ी सेना रखें और राष्ट्र-समूह भी छोटी-सी सेना रखे, यह बहुत बड़ा परिहास मालूम होता है। मैंने कई दफा कहा है कि संयुक्त राष्ट्र सेना रखता है, यह गलत है। अगर उसे सेना रखनी ही थी, तो अमेरिका और रूस से ज्यादा सेना रखता। वह संभव नहीं। इसका मतलब, थोड़ी-सी सेना रखकर 'नाक कटवाकर अपशकुन' किया। संयुक्त राष्ट्र को शांतिसेना रखनी चाहिए। भारत में दुनिया की आबादी का छठवां हिससा है। कुल दुनिया की जनसंख्या के हिसाब से दुनिया में सात लाख शांतिसैनिक चाहिए। अगर संयुक्त राष्ट्र ऐसी शांतिसेना खड़ी नहीं करता है, तो आप स्वतंत्र ताकत खड़ी कर सकते हो। फिर संयुक्त राष्ट्र खतम ही होगा। उसका कोई उपयोग नहीं होगा। इस शांतिसेना को जो देश कबूल नहीं करेगा, वह दुनिया की सहानुभूति खोयेगा। विश्वशांति के लिए यह करना होगा कि सब देशों में अपनी-अपनी शांतिसेना बने और राष्ट्रीय तौर पर एक शांतिसेना मंडल हर राष्ट्र में हो। उनके प्रतिनिधि मिलकर एक विश्व-शांतिमंडल बने। उसे हम 'सेना' नहीं कहेंगे। लेकिन वह मंडल विश्व-शांतिसेना बनाने का अधिकारी माना जायेगा।

(विनोबा साहित्य : तीसरी शक्ति खंड 16)